कॉलर मार सकता है !

सावधानी: बिना देखभाल के गली में रहने वाले जानवरों पर कॉलर लगाने से उनकी चोट आ सकती है या मौत भी हो सकती है |

- गली के कुत्ते और बिल्लियों को तब तक कॉलर ना लगाएं, जब तक उनकी कम से कम 15 दिन में एक बार कोई देखभाल करे |
- जालों का उपयोग करके पकड़े जाने के बाद छोड़े गए गली के कुत्तों को कॉलर मत लगाएँ। ऐसे कुत्तों पर निगरानी रखना और उन्हें आसानी से संभालना बहुत मुश्किल है।
- देख लीजिए कि आप जानवर की गर्दन और कॉलर के बीच में आसानी से दो उंगलियाँ डाल पाएँ।
- देख लीजिए कि गली के कुत्तों के कॉलर में केवल ब्रेकअवे बकल हों।

	गली के जानवरों पर कॉलर लगाने का खतरा	गली के जानवरों पर कॉलर लगाने के फायदे
जीवनघाती ख़तरा	कॉलर गर्दन में कट सकते हैं और कीड़े वाले घाव, सेप्टीसीमिया और मृत्यु का भी कारण बन सकते हैं। जब जानवरों का वज़न बढ़ जाता है और/या वे बड़े हो जाते हैं, तो कॉलर बहुत टाइट हो जाते हैं। जैसे ज्यादा उम्र वाले नपुंसक कुत्ते का ज्यादा वजन बढ़ने का डर है गली के कुत्ते कॉलर की चोटों को ख़ुद से ठीक नहीं कर पाते क्योंकि यह स्थान उनके पहुंच से बाहर होता है	रात के वक़्त, रिफ्लेक्टिव कॉलर की वजह से वाहन चालकों को कुत्तों/जानवरों को देखने में आसानी होती है, और इससे दुर्घटनाओं में कमी आती है।हालाँकि, इन्हें बार-बार बदलने की ज़रूरत होती है	
ख़तरनाक	ढीले तारों और केबलों और मकानों पर लगे हुए लोहे के तारों में कॉलर फंस सकते हैं। ये ब्रेकवय कॉलरों के साथ कम होते है।	पहचान टैग या क्यूआर कोड वाले कॉलर खोए हुए / रिलोकेट किए गए कुत्ते / जानवर के उसके घर वापस लौटने और आसान हो जाती है।
कम ख़तरनाक	कॉलर में माइट्स (जो मेंज का कारण बनते हैं) और कीड़े लग सकते हैं। गली के कुत्ते ख़ुद को, और एक दूसरे को चाट कर देखभाल करते हैं। लेकिन कॉलर की देखभाल नहीं कर सकते हैं।	कॉलर लगाने से लग सकता है कि उस कुत्ते / जानवर का कोई पालने वाला है। लेकिन ये हमेशा सही नहीं होता है। जैसे कॉलर ड्राइव के दौरान कई कुत्तों को कॉलर पहना दिया जाता है ।
अन्य चिंता	गली के कुत्तों के लिए कॉलर आसानी से गंदे और बदबूदार हो जाते हैं। ज़्यादातर गली के कुत्ते कॉलर लगाने या बदलने नहीं देना चाहते है और उन्हें निकलने की कोशिश करते हैं। कॉलर पहने पर उनकी गर्दन खुजलाने भी लगती है	

Photo by Help in Suffering (Jaipur)

Photo by Blue Cross of India (Chennai)

Photo by Help in Suffering (Jaipur)

For more resources on
smart caregiving for street dogs:

Remaking One Health Indies

THE UNIVERSITY of EDINBURGH